

विकसित भारत और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: मुद्दे, चुनौतियाँ और अवसर

डॉ. राजेन्द्र कुमार

स्हायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय महाविद्यालय भट्टू कलां, फतेहाबाद (हरियाणा)

rajendrakumarsewda@gmail.com

सारांश – कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का विषय बना हुआ है। भारत में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव देखा जा रहा है। भारत में जनसाधारण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर जागरूकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति (2047) के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का आर्थिक विकास, समावेशी शासन और सामाजिक प्रगति के लिए उपयोग सुनिश्चित करना होगा। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिशन की स्वीकृति के बाद सार्वजनिक निजी भागीदारी के जरिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में नवाचार और पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना आसान होगा। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में प्रतिभा और कार्यबल विकास को लेकर तेजी से कार्य हो रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के माध्यम से विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर डिजाइन को शामिल किया गया है। भारत वैश्विक दक्षिण का नेतृत्वकर्ता है। इसलिए भारत में डिजिटलीकरण तक सभी वर्गों की समान पहुँच आवश्यक है। भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में पावर हाऊस बनाने के लिए कम्प्यूटर इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के स्वदेशी मॉडल, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे का विस्तार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में व्यापक निवेश का कार्य तेजी से आगे बढ़ाना होगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग संकट और उत्प्रेरक दोनों ही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से सम्बन्धित चुनौतियाँ का समाधान अति आवश्यक है।

कुंजीभूत शब्द – कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विकसित भारत, डिजिटलीकरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, साइबर सुरक्षा।

प्रस्तावना – कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकसित भारत के आर्थिक विकास के लक्ष्य की पूर्ति को नई दिशा प्रदान कर रही है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पेशेवरों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। भारत में वैश्विक कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रतिभा का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा मौजूद है। भारत अपने विकास को प्राप्त करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अनुप्रयोग कृषि, लॉजिस्टिक्स, एमएसएमई शिक्षा स्वास्थ्य सेवा और ऊर्जा क्षेत्रों में व्यापक तौर पर कर सकता है। भारत के आर्थिक और समावेशी विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सुनियोजित दृष्टिकोण अपनाकर लाभ उठाया जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग भारत में पिछले एक दशक में तेजी से बढ़ा



हैं। भारत में आर्थिक क्षमता की वृद्धि, डिजिटलीकरण, रोजगार वृद्धि, कृषि उत्पादन में वृद्धि, ऊर्जा प्रबंधन, शिक्षा में बदलाव और सार्वजनिक सेवा में वितरण को कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है। विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। जैसे कार्य बल की अकुशलता, डिजिटल बुनियादी अवसंरचना की कमी, कंप्यूटिंग तथा डेटा की सीमाएं, मजबूत संस्थागत कार्यवाहों का अभाव, लैंगिक असमानताएं, अनुसंधान और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ापन और पर्यावरणीय चुनौतियाँ विद्यमान हैं। भारत जैसे विकासशील देश में कृत्रिम बुद्धिमता का श्रम बाजार पर व्यापक बदलाव पड़ने वाला है। कृत्रिम बुद्धिमता के व्यापक उपयोग से आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। तकनीकी नवाचार का लाभ केवल कुछ गिनीचुनी कम्पनियों तक सीमित रहने की संभावना है। कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग 21 वीं शताब्दी में तेजी के साथ बढ़ा है। भारत में अभी कृत्रिम बुद्धिमता के पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन कर रणनीतियाँ बनाई जा रही हैं। भारत विकसित देशों से सीखकर नीति निर्माण और संस्थागत सुधार हेतु कदम उठा रहा है। बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप भारत को श्रम बाजार में अपेक्षित बदलाव करना होगा। कृत्रिम बुद्धिमता के अनुकूल कार्यबल को तैयार करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र को मिलाकर कार्यक्रम चलाना होगा। कृत्रिम बुद्धिमता को लेकर हमें उसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के प्रति सतर्क रहना होगा। कृत्रिम बुद्धिमता का स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिंग और व्यापार जैसे क्षेत्रों में उपयोग व्यापक बदलाव और अवसर ला सकता है। इसके लिए श्रम बाजार में आवश्यक परिवर्तन और सेवा क्षेत्र को सशक्त बनाना होगा।

अनुसंधान विधि – प्रस्तुत शोध 'विकसित भारत (2047) और कृत्रिम बुद्धिमता: मुद्दे चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर केन्द्रित है। शोध पत्र के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित मुद्दों, चुनौतियों और अवसरों का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोत के रूप में पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, प्रकाशित लेखों, इन्टरनेट वेबसाइट आदि का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र के माध्यम से भारत में कृत्रिम बुद्धिमता से जुड़े मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए इसके मार्ग में मौजूद चुनौतियों को रेखाखिंत किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमता को लेकर भारत में सही तरीके से उपयोग करने के संदर्भ में सुझाव प्रस्तुत है।

शोध का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र 'विकसित भारत और कृत्रिम बुद्धिमता: मुद्दे, चुनौतियाँ और अवसर के उद्देश्य निम्नलिखित है—

1. विकसित भारत के निर्माण (2047) में कृत्रिम बुद्धिमता के महत्त्व का आंकलन करना।
2. विकसित भारत और कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण मुद्दों का अध्ययन करना।



3. भारत के सन्दर्भ में कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित चुनौतियों का पता लगाना।
4. भारत में कृत्रिम बुद्धिमता के उपयोग से सम्बन्धित अवसरों और सम्भावनाओं का आंकलन करना।
5. विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा –

जगदेव सिंह राणा (2025) ने अपने अध्ययन 'विकसित भारत (2047) के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत के विकास में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की महत्वपूर्ण भूमिका पर अध्ययन' के द्वारा बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमता के प्रभाव की पड़ताल की है। साथ ही डेटा संरक्षण, प्रतिभा विकास और नैतिक विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

संजय कुमार शर्मा (2024) ने अपने अध्ययन 'कृत्रिम बुद्धिमता: वरदान या अभिशाप' के माध्यम से इसके मानवीय जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया है।

लक्ष्मी शंकर अवस्थी और अमित कुमार वाजपेयी (2023) ने अपने शोध पत्र 'भारत में आर्थिक स्थिरता में कृत्रिम बुद्धिमता की भूमिका' में रोजगार सृजन, कृषि विकास, अनुसंधान और आविष्कार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है।

डी. मजुमदार और एच. के. चट्टोपाध्याय (2020) के अध्ययन 'कृत्रिम बुद्धिमता और समाज पर इसका प्रभाव' में भारतीय समाज में कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इन समस्याओं के निदान पर बल दिया गया है। कृत्रिम बुद्धिमता से सम्बन्धित उचित नीतियों का अभाव व्यक्ति के डेटा को संरक्षित करने का अभाव, नैतिक मानकों का अभाव इत्यादि चुनौतियों को उजागर किया है।

विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमता की आवश्यकता— विश्व के देशों में कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग तेजी के साथ बढ़ा है। विश्व के प्रौद्योगिकीय रूप से उन्नत देशों की तुलना में भारत अभी भी कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। अभी भी कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में चीन और अमेरिका जैसे देशों का वर्चस्व है। 21 वीं शताब्दी में कृत्रिम बुद्धिमता सबसे प्रभावशाली और परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी बन चुकी है। पिछले एक दशक में भारत में कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में क्रान्तिकारी बदलाव आया है। कृत्रिम बुद्धिमता को बढ़ावा देकर स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिंग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों में नए अवसरों को लाया जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमता भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से बदलाव का माध्यम बन रही है। कृत्रिम बुद्धिमता के उपयोग से शासन में नीति निर्माण, भ्रष्टाचार में कमी, शिकायत निवारण तंत्र का सशक्त होना, पूर्वानुमान और निगरानी में सहायक, डिजिटल समावेशन और मानव संसाधन प्रबंधन इत्यादि के लाभ होते हैं¹



भारत विश्व में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश है। इसके साथ ही भारत के पास सबसे ज्यादा युवा आबादी है अतः निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे ज्यादा इस्तेमाल भारत में ही होगा। भारत में नवाचार और तकनीक के क्षेत्रों तेजी से वृद्धि हो रही है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावों को संतुलित करने के लिए तीन प्रकार के संस्थानों को अपनाने की आवश्यकता है—

1. **सक्षम संस्थान** – यह संस्थान श्रमिकों को नए कौशल प्रदान करना, शिक्षा को अद्यतन करना और श्रम बाजार का पुर्नगठित करने का कार्य करेंगे।
2. **बीमा संस्थान** – इन संस्थान का कार्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण प्रभावित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय सहायता और पुनः नियोजन में सहायता प्रदान करना होगा।
3. **मार्गदर्शी संस्थान** – इस संस्थान का कार्य नैतिक और सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करना, नियामक ढांचे को सुदृढ़ करना और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मदद करना होगा²

भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सम्बन्धित चुनौतियाँ – विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कारगर भूमिका को लेकर कोई संदेह नहीं है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सही तरीके से उपयोग करना होगा क्योंकि यह वरदान और अभिशाप दोनों ही हो सकती है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाने के मार्ग में अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद है, जो निम्नलिखित है—

- **कौशल युक्त कार्यबल की कमी** – भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग तेजी के साथ बढ़ रहा है। भारत में अभी भी उच्च कौशल से युक्त कार्यबल की बढ़ती मांग की तुलना में आपूर्ति बहुत कम है।
- **उच्च तकनीकयुक्त केन्द्रों की आवश्यकता** – भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग से सम्बन्धित मानव संसाधन की पर्याप्त उपलब्धता और प्रशिक्षण हेतु तकनीक आधारित उत्कृष्ट केन्द्रों के निर्माण की आवश्यकता है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर अभी भी बुनियादी ढांचे की कमी और उच्च दक्षता से युक्त कौशल की कमी है।
- **डेटा गोपनीयता बड़ी चुनौती** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग में डेटा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में डेटा की गोपनीयता बनाये रखने और उसका नैतिक उपयोग को लेकर सशक्त कानून की परम आवश्यकता है ताकि डेटा की चोरी को रोका जा सके। एआई तकनीकी का दुरुपयोग किसी को ब्लैकमेल करने अथवा उसकी निजता भंग करने के लिए किया जा सकता है।³



- **डेटा प्रबन्धन केन्द्रों का अभाव** – भारत में अमेरिका और चीन की तुलना में डेटा प्रबन्धन केन्द्रों का अभाव कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के मार्ग में बड़ी चुनौती है। वैश्विक स्तर पर डेटा प्रबन्धन को लेकर देशों में एकरूपता का अभाव है।
- **साइबर अपराधों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग** – भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रयोग ने डिजिटलीकरण को भी बढ़ावा दिया है। वर्तमान में साइबर अपराध एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि डिजिटल निर्भरता बढ़ने से फर्जीवाड़ा, डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी और व्यक्तिगत राजनीतिक जानकारी के दुरुपयोग के मामले बढ़ रहे हैं।⁴ कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसमें सहायक बनती है। भावनात्मक और तलाकशुदा श्रेणी वाले लोग लव बॉम्बिंग तकनीक के जरिये ठगों के शिकार ज्यादा होते हैं।
- **मनुष्य की बुद्धि का मुकाबला नहीं** – भारत विश्व में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है। साथ ही उसके पास सबसे ज्यादा ऊर्जावान युवाओं की संख्या है। इस सन्दर्भ में भारत को समावेशी आर्थिक विकास को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा वे कार्य नहीं किया जा सकते जो मनुष्य अपनी बुद्धि से कर सकता है।⁵
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता में उच्च ऊर्जा खपत के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि होती है। कुलिंग के लिए पानी का उपयोग बढ़ता है। हार्डवेयर निपटान से इलेक्ट्रॉनिक कचरे का उत्पादन होता है।⁶ विकसित भारत के निर्माण हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल करना होगा। भारत में पर्यावरणीय समस्याएं पहले से ही गंभीर बन चुकी है।

विकसित भारत के निर्माण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सम्बंधित समाधान एवं सुझाव:- कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान में पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। वर्तमान में भारत में सामान्यजन कृत्रिम बुद्धिमत्ता जनित तकनीकों से बड़े पैमाने पर लाभाविन्त हो रहा है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए उत्कृष्टता केन्द्रों की स्थापना के जरिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता इकोसिस्टम को मजबूत बनाया जा रहा है। जिससे इस क्षेत्र में नवाचार और आत्मनिर्भरता का मार्ग, प्रशस्त हो रहा है।⁷

भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिशन के तहत कृत्रिम बुद्धिमत्ता कम्प्यूट इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार, हाई-परफॉरमेंस कम्प्यूटिंग तक पहुंच सुनिश्चित करना, मजबूत ग्राफिक्स, प्रोसेस युनिट आपूर्ति श्रृंखला, स्वदेशी ग्राफिक्स



प्रोसेसिंग युनिट क्षमताएं, किफायती कम्प्यूट पडुंच, भारत में सेमीकंडक्टर विनिर्माण मजबूत करना, भारत कृत्रिम बुद्धिमता का पोर्टल और डेटासेट प्लेटफॉर्म इत्यादि पहले की गई है।

- **बुनियादे ढांचे में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता** – कृत्रिम बुद्धिमता अनुसंधान और बुनियादी ढांचे में बढ़े हुए निवेश के साथ-साथ लक्षित नीतियों के साथ भारत अपनी स्थिति को काफी मजबूत कर सकता है। अभी भारत 32 देशों के समूह में कृत्रिम बुद्धिमता अनुसंधान में 11 वें स्थान और अवसंरचना में 16 वे स्थान पर है। भारत को तेजी के साथ बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **डेटा संग्रहण की आवश्यकता** – कृत्रिम बुद्धिमता को लेकर भविष्य में नस्लीय या सांस्कृतिक भेदभाव के बिना विश्वसनीयता के आधार पर डेटा संग्रहण का कार्य किया जाना चाहिए।
- **सशक्त कानूनी ढांचे की आवश्यकता** – भारत में डेटा के नियन्त्रण और उसके नैतिक उपयोग के लिए सशक्त कानूनी ढांचे के निर्माण की आवश्यकता है। भारत में शीर्ष विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों और भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों को डीपफेक, गोपनीयता, जोखिमों और साइबर सुरक्षा खतरों के समाधान विकसित करने हेतु वित्त पोषित किया जा रहा है। तकनीकी कानूनी दृष्टिकोण के जरिये नवाचारों को बढ़ावा और नैतिक चिन्ताओं से मुक्ति पर बल दिया गया है।

डीपफेक के प्रति जागरूकता आवश्यक – डीपफेक विडियो को पहचानने के लिए आपको विडियो पर दिखने वाले व्यक्ति के चेहरे के एक्सप्रेशन, आँखों की बनावट और बॉडी स्टाइल पर गौर करना होगा। आमतौर पर ऐसे विडियो में बॉडी और चेहरे का कलर मैच नहीं करता है।⁸ कृत्रिम बुद्धिमता के उपयोग को लेकर सतर्कता अपनानी आवश्यक है।

- **कवांटम तकनीक को अपनाना आवश्यक** – भारत में क्वांटम तकनीक के क्षेत्र में तेजी से अनुसंधान होना चाहिए। क्वांटम तकनीक की मदद से गणना को सुरक्षित और आसान बनाया जा सकता है। क्वांटम तकनीक साइबर सुरक्षा के लिए बेहद आवश्यक है। क्वांटम तकनीक की मदद से मौसम का पूर्वानुमान में काफी सुधार हो सकता है।⁹ कृत्रिम बुद्धिमता के सुरक्षित और कारगर उपयोग हेतु क्वांटम तकनीक की दिशा में तेजी के साथ कार्य किया जाना चाहिए।
- **कृत्रिम बुद्धिमता हेतु पारिस्थितिक तन्त्र की आवश्यकता** – वर्तमान में चीन, अमेरिका और इजरायल जैसे देश कृत्रिम बुद्धिमता या मशीन लर्निंग जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भारत से बहुत आगे हैं। भारत में समग्र सामाजिक और समावेशी विकास को प्रोत्साहित करने हेतु मजबूत कृत्रिम बुद्धिमता पारिस्थितिक तन्त्र का निर्माण करने की आवश्यकता है।¹⁰ विकसित भारत के निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु 5जी, इंटरनेट ऑफ



थिंग्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्वांटम कम्प्यूटिंग, रोबोटिक्स तथा अन्य आधुनिक तकनीकों के विकास एवं विस्तार के साथ उनके अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य तेजी से किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता 21 वीं शताब्दी की सबसे क्रान्तिकारी तकनीकों में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता वरदान या अभिशाप दोनों ही है। 21 वीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास और तबाही दोनों का साधन बन सकता है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होने वाली है। एक बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर जल्दबाजी करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का समाज, अर्थव्यवस्था, सेवाओं, शिक्षा स्वास्थ्य और कृषि जैसे क्षेत्रों में प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ के साथ-साथ इससे होने वाली हानियों की चर्चा ज्वलंत विषय बन हुआ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत में आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, डेटा सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में प्रभावी अनुसंधान के जरिये इसके संभावित दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अवसर और चुनौती दोनों ही हैं। इसे एक अवसर के रूप में ही स्वीकार किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में सावधानी के साथ ही एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की नितान्त आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सन्दर्भ में मानवीय एवं नैतिक पक्ष की अवहेलना घातक सिद्ध हो सकती है। विकसित भारत के निर्माण हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता को समावेशी, समतामूलक, सतत् विकास, नैतिकतापूर्ण, स्वदेशी और सुरक्षात्मक पहलुओं के साथ अपनाया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची –

1. सिविल सर्विसेज, क्रॉनिकल, अगस्त, 2025, पृष्ठ, 25
2. दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे, मार्च, 2025, पृष्ठ, 124
3. बाजपेयी डॉ० अरुणोदय, आर्टिफिशियल इन्टेलीजिन्स का वैश्विक प्रबन्धन तथा भारत, प्रतियोगिता दर्पण, मई, 2025, पृष्ठ, 70
4. साइबर अपराध के बढ़ते खतरे, सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, अक्टूबर, 2025, पृष्ठ, 20
5. प्रतियोगिता दर्पण, फरवरी, 2024 पृष्ठ, 22
6. सिंह रवि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और पर्यावरणीय प्रभाव, प्रतियोगिता दर्पण, मई, 2025, पृष्ठ, 107
7. चौहान डॉ० श्याम सुन्दर सिंह, कृत्रिम बुद्धिमत्ता: क्रान्ति की और अग्रसर भारत, प्रतियोगिता दर्पण, मई, 2025 पृष्ठ, 78



8. प्रतियोगिता दर्पण, फरवरी, 2024 पृष्ठ, 103–104
9. सिविल सर्विसेज, क्रॉनिकल, अगस्त, 2022, पृष्ठ, 158
10. सिविल सर्विसेज, क्रॉनिकल, अगस्त, 2022, पृष्ठ, 09

